कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, सितम्बर 2024 | वर्ष 2, अंक 11, पृष्ठ 4

विकसित भारत बनाने में आरएलए की भूमिका होगी





दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने ध्वजारोहण कर सभी को शुभकामनाएं दी।

आस्था त्रिपाठी

नई दिल्ली। हम बचपन से सुनते आ रहे हैं कि भारत विकासशील देश है, परंतु यह विकसित कब होगा? कैसे होगा? उसकी विधाएं क्या होंगी? क्या करना होगा कि इतने वीरों के बलिदान से मिली स्वाधीनता कदम दर कदम सफल हो। हमारा लक्ष्य है कि 2047 तक हम विकासशील से विकसित देश के रूप में जाने जाएं। यह बातें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने बच्चों और शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहीं। रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता की पंक्तियां 'बदली थी जो पीछे छूटी' का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि यह कविता इतिहास और वर्तमान दोनों पर लागू होती है और उन्हें आपस में जोड़ती है।

स्वाधीनता और स्वतंत्रता को बरकरार रखने के बारे में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने कहा कि उसमें सबसे बड़ी भूमिका उच्च शिक्षण संस्थानों की होती है क्योंकि हमारे पास बच्चे बारहवीं पास करके आते हैं। यहां पर उनके विचार और उनकी सोच बढ़ती है। अपने करियर को आगे बढ़ाने का मौका और मार्गदर्शन मिलता है। शिक्षकगण इसमें अहम भूमिका निभाते हैं। हमारा लक्ष्य है 2047 तक विकसित और समृद्ध भारत का, उसमें राम लाल आनंद महाविद्यालय अपनी भूमिका अदा करेगा। आगे के वर्षों में भारत सरकार के विज़न को पूरा करते हुए कॉलेज में विद्यार्थियों को ऑपर्च्युनिटी और ट्रेनिंग दी जाएगी। इसी के चलते तय किया गया है कि स्किल डेवलपमेंट सेंटर बनाया जाएगा, जो बच्चों को ट्रेनिंग देगा कि कॉरपोरेट में कैसे आगे बढ़ें।

स्किल सेंटर में जेनोमिक्स हर साल 80 से 100 बच्चे तैयार करेगा, जो पर्सनलाइज्ड मेडिसिन में आगे जाएंगे, जो दवाइयों के नुकसान कम करने और प्रभाव बढ़ाने का काम करता है। जेनोमिक्स, जेनेटिक एनालिसिस, जीपीएस मैपिंग, कंप्यूटर साइंस इनक्यूबेशन सेंटर और जीआईएस डाटा के लिए स्किल डेवलपमेंट सेंटर कार्यरत हैं। एक दशक और लगेगा इसमें अभी, कारण सुविधाएं और ट्रेंड व्यक्ति का न होना है। कॉलेज में अभी दो कंप्यूटर लैब बनी हैं, जो आईटी स्किल डेवलपमेंट सेंटर का काम करेंगी।

प्राचार्य ने कहा कि पिछले साल 7 से 8 स्टार्टअप बच्चों ने शुरू किए थे, जिसमें एंटरप्रेन्योर सेल ने सहयोग किया, जिससे हमारे विद्यार्थी आगे चलकर दूसरों को नौकरी दे सकें। ये सारी चीजें 2047 के लक्ष्य को पूरा करने के लिए सहायक होंगी ताकि विद्यार्थी दायरे से बाहर निकल कर सोचें, नवीन कौशल सीखें। विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने में हम सबकी भूमिका कितनी अहम है यह समझाते हुए उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया। साथ ही एनसीसी और एनएसएस के छात्र–छात्राओं के कार्य के लिए उनकी प्रशंसा भी की।

इससे पहले दिल्ली विश्वविद्यालय के एनसीसी अधिकारी मेजर प्रो. संजय कुमार शर्मा ने कहा कि 15 अगस्त और 26 जनवरी छुट्टी नहीं, हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं। हमें इन्हें भारत के शांतिपूर्ण और अभूतपूर्ण प्रगति के रूप में मनाना चाहिए। हमारा सांस्कृतिक वैभव बेजोड़ है। हमारा गौरवशाली इतिहास है, जिस पर हमें गर्व है। समारोह में महाविद्यालय की उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान, प्रो मुक्ता दत्ता मजूमदार, प्रो. प्रदीप कुमार शर्मा, प्रो. राकेश कुमार, प्रो. अर्चना गौड़ सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी मौजूद थे।

आरएलए विद्यार्थियों के लिए सुनहरा मौका

आर्यन

नई दिल्ली। आज के इस दौर में विद्यार्थियों के लिए काम का अनुभव होना बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसी के चलते दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्लेसमेंट सेल ने एक प्लेसमेंट कंपनी को इंटर्नशिप के लिए बुलाया गया।

'प्लेनेट स्पार्क कंपनी के12' शिक्षार्थियों के लिए इंग्लिश कम्युनिकेशन, व्याकरण, पब्लिक स्पीकिंग, क्रिएटिव राइटिंग, डिबेट आदि में लाइव ऑनलाइन क्लासेज प्रदान करती है। यह कंपनी अपनी जरूरत के हिसाब से विद्यार्थियों को अलग–अलग अवसर प्रदान करती है। जैसे– बिजनेस डेवलपमेंट काउंसलर, सोशल मीडिया मार्केटिंग, कन्टेंट राइटर आदि।

बात करें काम की तो अभिभावकों से साक्षात्कार, पोस्ट डेमो क्लास आदि कई अवसर ऐसे हैं, जो विद्यार्थियों के सामने रखे गए हैं। कंपनियों की ओर से विद्यार्थियों के लिए कुछ पात्रता मापदंड भी निर्धारित किए गए हैं जैसे–प्रेजेंस ऑफ माइंड, अंग्रेजी में प्रवीणता, सामाजिक ज्ञान आदि के साथ ही आप राम लाल आनंद महाविद्यालय के विद्यार्थी होने चाहिए। इसके लिए आवेदन की अंतिम तिथि 8 अगस्त 2024 रखी गई थी।

आरएलएसी में आपका स्वागत है...

दिव्या और श्वेता

नई दिल्ली। अपना लक्ष्य ध्यान में रखते हुए मस्ती करें। लक्ष्य को ध्यान में रखने के साथ मस्ती करेंगे तो आपका जीवन, आपका करियर बन जाएगा और मस्ती के पल भी याद रहेंगे। आपके पास चार साल का समय अपना करियर बनाने के लिए है। यह साबित करने के लिए कि आपने जो निर्णय लिया, वह सही है। यह बात 29 अगस्त 2024 को राम लाल आनंद महाविद्यालय के ओरिएंटेशन समारोह में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने कही।

एम्फी थियेटर में आयोजित समारोह में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने नए विद्यार्थियों को बताया कि महाविद्यालय में छह लैब काम कर रही हैं। पुस्तकालय में लगभग 70,000 किताबें हैं। महाविद्यालय का अपना सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम है, जो हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग संचालित करता है। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए प्राचार्य ने बताया कि महाविद्यालय में पिछले सालों में स्किल एंपावरमेंट पर खास जोर दिया गया है। अभी तक 55 से अधिक स्किल सर्टिफिकेट कोर्स कराए गए हैं। इसे आगे भी जारी रखा जाएगा।

नवागंतुक विद्यार्थियों और अभिभावकों को जानकारी देने के लिए एक पीपीटी प्रेसेंटेशन प्रस्तुत की गई। इसमें प्रो. वंदना गुप्ता की ओर से महाविद्यालय में संचालित सभी विषयों और उनके प्रश्नपत्रों से अवगत करवाया गया। प्रश्नपत्र चुनने के तकनीकी पक्ष बताए गए। आयोजन समिति की संयोजक प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार ने समितियों और उनके कार्यों के बारे में बताया। समितियों का महत्व बताते हुए उनका कहना था कि कैसे समितियां विद्यार्थी जीवन में सकारात्मक बदलाव लाती हैं।

शारीरिक शिक्षा विभाग के शिक्षक प्रो. प्रदीप कुमार शर्मा ने महाविद्यालय में खिलाए जाने वाले 14 खेलों के बारे में बताया। खेल में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने पर विद्यार्थियों को कितनी राशि पुरस्कार में दी जाती है और फीस कैसे रिफंड होती है, इसकी जानकारी विस्तार से दी। इओसी की संयोजक डॉ. निधि एस. चंद्रा ने इओसी के बारे में बताया कि यह समिति अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग सहित कमजोर विद्यार्थियों की मदद करती है। एनएसएस अधिकारी डॉ. अनुराग शर्मा ने विद्यार्थियों की ओर से परिसर, आसपास के समाज और राजस्थान के गांव में किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया।

दिल्ली विवि और महाविद्यालय के एनसीसी अधिकारी मेजर प्रो. संजय कुमार शर्मा ने महाविद्यालय की एनसीसी की गतिविधियों के बारे में बताया। लेखक हरिवंश राय बच्चन की 'मधुशाला' की पंक्तियों से अपनी बात शुरू करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन का महत्व समझाया। साथ ही कहा कि आपको खूब आज़ादी है, लेकिन उसकी एक सीमा है। इससे पहले वरिष्ठ शिक्षक प्रो. राकेश कुमार (इतिहास विभाग) ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए महविद्यालय के बारे में बताया। संच. ालन डॉ. नूपुर साबू ने किया। समारोह की शुरुआत में पत्रकारिता विभाग की ओर से बनाई गई महाविद्यालय पर केन्द्रित डाक्यूमेंट्री दिखाई गई। दस्तूर समिति ने विवि का कुलगीत पेश किया। भारी बारिश के बावजूद लोग इतनी बड़ी संख्या में पहुंचे थे कि एम्फी थियेटर के दूसरे तल सहित तीन बड़ी कक्षाओं में उन्हें बैठा कर समारोह का लाइव प्रसारण किया गया। समारोह में प्रो. राकेश कुमार, प्रो. अर्चना गौड़, प्रो. सीमा गुप्ता, डॉ. केजी त्यागी, डॉ. रा. जेश गौतम, डॉ. सुनयना, डॉ. शिखा वर्मा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक मौजूद रहे।



राम लाल आनंद महाविद्यालय के ओरिएंटेशन समारोह में प्राचार्य ने विद्यार्थियों को संबोधित किया।

महाविद्यालय कर रहा विद्यार्थियों के लिए काम

खुशी शाक्या

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय का राम लाल आनंद महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों के लिए एक से बढ़कर एक काम करने में लगा हुआ है। इसी के चलते महाविद्यालय की प्लेसमेंट सेल ने खेल में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए एक स्पोर्ट्स टेक कंपनी को इंटर्नशिप के लिए बुलाया।

स्मैश 2प्ले विश्व स्तरीय कृत्रिम टर्फ और प्रमुख बैडमिंटन अकादमियों वाली एक अग्रणी कंपनी है। यह कंपनी उच्च गुणवत्ता वाली कृत्रिम टर्फ विभिन्न खेलों के लिए बेजोड़ स्थायित्व और प्रदर्शन प्रदान करती है। स्मैश 2प्ले अत्याधुनिक सतहों और व्यापक प्रशिक्षण समाधानों के साथ एथलेटिक अनुभवों को बदल देता है। खेल उत्कृष्टता और नवाचार में नए मानक स्थापित करता है। यह कंपनी अपने हिसाब से अलग–अलग पदों पर विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करती है, जैसे–बिजनेस डेवलपमेंट, सोशल मीडिया मार्केटिंग, कंटेंट राइटर, वीडियोग्राफर, वीडियो एडिटर ग्राफिक डिज़ाइनर, एसईओ ऑपरेटर आदि। इंटर्नशिप दो महीने के लिए है और स्टाइपेंड 50 हजार रुपए तक रहेगा। आवेदन की अंतिम तिथि 15 अगस्त 2024 रखी गई थी। इसमें घर से काम करने की सुविधा थी।

हमेशा कुछ नया सीखते रहना चाहिए

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में हमें यह सिखाया जाता है कि हमें हर विषय की थोड़ी बहुत जानकारी होनी चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने समाचार पत्र बनाने और क्वार्क एक्सप्रेस सीखने का फैसला लिया। इस सोच को साकार करने में अटल सर ने मेरा मार्गदर्शन किया। साथ ही मुझे सितंबर 2024 का अंक भी सौंपा। इस प्रक्रिया को शुरू करना मेरे लिए आसान नहीं था, इससे पहले मैंने क्वार्क एक्स्प्रेस का प्रयोग नहीं किया था। यह सीखना मेरे लिए किसी विषय की शून्य से शुरुआत करना था। ऐसा करते समय लगा कि जब हम किसी चीज़ को बिल्कुल शुरुआत से सीख कर उस पर काम करते हैं तो वह हमें और नया सीखते रहने की प्रेरणा देता है। इससे नई–नई चीजें सीखने और प्रयोग में लाने का उत्साह और साहस हमें मिलता है। यही उत्साह 'कैम्पस कनेक्ट' का संपादन करते हुए हमारे अंदर बना रहा।



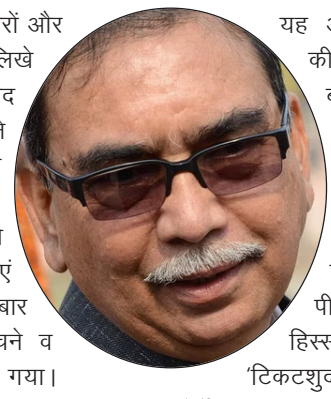
खुशी

नवीन जोशी को अयोध्या प्रसाद खत्री सम्मान

संजीव राज

नई दिल्ली। लेखक नवीन जोशी हिंदी साहित्य जगत का परिचित नाम हैं। नवीन जोशी को अपने गांव से अलग होने का दर्द हमेशा रहा। आप उनके अखबारी लेखों में भी इस दर्द को महसूस कर सकते है। नवीन जोशी ने एक लेख लिख कर 'स्वतंत्र भारत' के लिए भेजा था। उस लेख में पाठकों को संबोधित करते हुए लिखा था कि अगर आप छुट्टियों में घूमने के लिए पहाड़ों पर जा रहे हैं तो वहां पर आप पहाड़ों की सुंदरता के साथ–साथ पहाड़ों में रह रहे लोगों का दर्द भी देखिएगा। उनका यह लेख पत्र में छपा, जिससे उन्हें आगे लिखने का हौंसला मिला। आप इस लेख में गांव से अलग होने का दर्द महसूस कर सकते हैं।

नवीन जोशी ने आकाशवाणी लखनऊ में भी काम किया है। वहां बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु' की संगत में रहने से नवीन की कुमाऊंनी बोली की कविताएं और कहानी, आकाशवाणी से प्रसारित होने लगीं। आकाशवाणी में उन्हें अपने जैसे कई जोशीले पहाड़ी युवा और वरिष्ठ रचनाकार मिले। अपनी किताब 'ये चिराग जल रहे हैं' में उन्होंने रचनाकारों और कलाकारों के संस्मरण लिखे हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद उनका पहाड़ वापस लौटने का इरादा था, पर वह पत्रकारिता में रम गए। अखबार में नौकरी करते हुए नवीन ने कई यात्राएं कीं। देश–दुनिया के अखबार पढ़े। इससे उनका सोचने व समझने का दायरा बढ़ता गया। पटना में रहते हुए उन्हें अपना पहला उपन्यास 'दावानल' पूरा करने का विचार आया। उन्होंने साल 2002 में 'दावानल' लिखना शुरू किया। दिन में वह नौकरी किया करते थे और रात में उपन्यास लिखते थे। उन्होंने इस उपन्यास को सम्पादित भी किया। 'दावानल' उपन्यास साल 1972–73 से 1984 तक चले चिपको आंदोलन के भटकाव पर है कि कैसे यह आंदोलन पर्यावरणविदों की वजह से सिर्फ पेड़ बचाने तक सिमट गया जबकि यह आंदोलन मुख्य रूप से जंगलों पर स्थानीय लोगों के अधिकारों के लिए था। पहाड़ के प्रवासियों की पीड़ा भी इसका प्रमुख हिस्सा है।



'टिकटशुदा रुक्का', 'बाघैन', 'अपने मोर्चे पर', 'राजधानी की शिकार कथा', 'ये चिराग जल रहे हैं', 'लखनऊ का उत्तराखंड' उनकी चर्चित कृतियां है। उनके लेखन को देखते हुए 15वां 'अयोध्या प्रसाद खत्री स्मृति सम्मान' नवीन जोशी के नए उपन्यास 'देवभूमि डेवलपर्स' को देने की घोषणा हुई है। 'देवभूमि डेवलपर्स' में उत्तराखंड के जन आंदोलनकारी संगठनों में टूट, राजनैतिक दलों की चालबाजियां और संसाधनों की लूट पर लिखा गया है। इसे पढ़ने से पता चलता है कि क्यों उत्तराखंड के गांवों से पलायन होता है और कैसे ठेकेदार, दलालों और नेताओं ने उत्तराखंड के जल, जंगल, जमीन पर अपना कब्जा जमा लिया है।

समाचार पत्रों में लिखते हुए साहित्य रचना करने वाले नवीन जोशी को आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान, राजेश्वर प्रसाद सिंह कथा सम्मान, गिर्दा स्मृति सम्मान समेत कई सम्मानों से नवाजा जा चुका है। नवीन जोशी नई पीढ़ी के लेखकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। अपनी जड़ों से जुड़े रहना उन्हें बाकियों से अलग बनाता है।

विस्थापन दर विस्थापन की बात करता है *काँधों पर घर*

'काँधों पर घर' उपन्यास की कहानी ढाई दशक के समय में फैली है। आपने इसी समय को उपन्यास के लिए क्यों चुना?

'काँधों पर घर' उपन्यास की जो कथा वस्तु है उसको अगर हम देखें तो उसकी पृष्ठभूमि एशियाई खेलों से शुरू होती है। जो मैं कहानी कहने जा रही हूं उसमें इस कालखंड का यह हिस्सा अटूट है। एक बड़ी परियोजना के तहत एशियाई खेलों में जब दिल्ली को मेजबानी करनी थी और कई जगहों से खिलाड़ी आ रहे थे। लोग आ रहे थे और दिल्ली को बदलना था। दिल्ली को खूबसूरत बनाना था और उसके लिए फ्लाइओवर्स बनने थे। स्टेडियम्स बनने थे। उसके लिए लाखों की संख्या में मजदूर देश के अनेक हिस्सों से आए। यहां उनकी एक बड़ी आश्रय स्थली यमुना पुश्ता बना, जो मेरे उपन्यास का लोकेल है। इस पुश्ते में वे लोग रहे। धीरे–धीरे परियोजनाएं पूरी हुईं। धीरे–धीरे देश के कई कर्णधारों ने यह महसूस करना शुरू किया कि अब इन मजदूरों की जरूरत खत्म हो चुकी है। देखिए, साहित्य क्या काम करता है? साहित्य हमेशा से एक तरह का इतिहास भी होता है। यह मैं मानती रही हूं। इतिहास जिस तरह से तथ्यात्मक तरीके से चलता है लेकिन इतिहास की रुकी चिनाई नहीं होती। वह कल्पना की गीली और उर्वर चिनाई होती है और उसको मैंने इस रूप में रखा कि उस पूरे दौर में उन मजदूरों का, जिनको देश ने बुलाया और उसके बाद खदेड़ दिया, उनके जीवन कैसे व्यतीत होते हैं। वे इस देश के लिए जो करते हैं और उसके बाद उन्हें भुला दिया जाता है।

मेरी कथा भूमि इसी पर केंद्रित रही है। वह ढाई दशक में जो जो परिवर्तन आए हैं और उन परिवर्तनों ने इन आम जीवन जीने वाले सामान्य लोगों की जिंदगी को कैसे प्रभावित किया है, उसको लेकर यह पूरा उपन्यास है। इसीलिए आप देखते हैं कि सभी शहरी मध्य वर्ग या उच्च वर्ग एक जैसी सोच नहीं रखते हैं। आप इस उपन्यास में भी पाएंगे कि इसके पात्र सिर्फ सामान्य जन नहीं हैं। उनके साथ कुछ पत्रकार भी जुड़े हुए हैं। आप देखते हैं निशांत मीणा जैसे पत्रकार हैं, जो मूल्यधर्मी पत्रकारिता को लेकर चलने वाले हैं या फिर समीर प्रताप या फिर इसकी एक और केंद्रीय चरित्र हैं उमा। ये तीनों पत्रकार एक जैसा सोचते हैं। अनीश जैसे पत्रकारों से अलग मूल्य चेतना के ये लोग हैं। इसके साथ एक और पात्र है सुगंधा, जो जनमंच जैसा एक पूरा संगठन चला रही है। यह मानवाधिकारों का संगठन है, जो पुश्ते के लोगों के बच्चों की शिक्षा या स्वास्थ्य की समस्याएं देखती हैं। लेकिन एक बड़ा तबका ऐसा भी है जो इससे अलग सोच रखता है। जब हमें काम होता है तो हम उनकी जरूरत महसूस करते हैं, लेकिन उसके बाद हमें लगता है कि वे इस शहर की गंदगी और कूड़ा करकट हैं और उन्हें यहां से हटाया जाना चाहिए। हम लोग सोचते हैं कि हम तो बहुत रेशमी और मखमली कालीन बुनने वाले लोग हैं और ये मजदूर उसमें बाधा डालने वाले हैं। जीवन की जो मूलभूत सुविधाएं देने वाला जो वर्ग है उसके प्रति उपेक्षा के भाव को लेकर, उस ढाई दशक में जितने बड़े परिवर्तन हुए हैं, वह दिखाने की कोशिश इस उपन्यास में की है। उसी दशक में आप देखते हैं कि 2002 में दिल्ली में पहली मेट्रो चलती है। इस उपन्यास की मुख्य नायिका है पूनम, उसका राजीव गांधी विद्यालय, मेट्रो परियोजना के तले दब जाता है। मैंने लिखा भी है इस उपन्यास में कि जब वो स्कूल टूट गया है तो पूनम के बहुत सारे सपने टूटे हैं और आप देखते हैं जब एक बार वह अपने



हिंदी की चर्चित लेखिका और दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल महाविद्यालय में हिंदी की प्रोफेसर ***प्रज्ञा*** पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो 'तरंग 90.0' एफएम की मेहमान थीं। उनके साथ किरोड़ीमल महाविद्यालय के कुछ विद्यार्थी भी सामुदायिक रेडियो की बारीकियां जानने और समझने आए थे। इसी दरम्यान विद्यार्थी ***हर्षित, गीतिका और सिद्धार्थ*** ने उनके नए उपन्यास 'काँधों पर घर' के बारे में विस्तार से बातचीत की। उसी बातचीत के कुछ अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए पेश हैं...

स्कूल के पुराने बच्चों को लेकर मेट्रो की पहली यात्रा पर जा रही है। अपने पति सूरज और अपनी बेटी के साथ तो वह सोचती है और अचानक कहती है, शायद यही वह टीला होगा, जिसके नीचे कहीं मेरा स्कूल दबा हुआ है। इस तरह की सारी घटनाएं इंडिया शाइनिंग वाली उस दौर में देखने को मिलेंगी। मुख्य रूप से इसलिए मैंने इस समय को लिया और साहित्य में समय एक बड़ी भूमिका निभाता रहा है।

किसी भी उपन्यास में पात्र ही सब कुछ होते हैं। मैंने इस उपन्यास को पढ़ा तो पाया कि इस उपन्यास के पात्र सकारात्मक हैं, आप इनकी रचना प्रक्रिया बताएं?

इस उपन्यास में यमुना पुश्ते की कहानी है। यह दिल्ली का बहुत बड़ा स्लम रहा है। इसकी कहानी लोग भूल चुके हैं या कुछ ऐसे हैं जो जानते भी नहीं हैं। इस पूरे पुश्ते में अनेक बस्तियां थीं–मूलचंद कॉलोनी, चीन कॉलोनी, बंगाली बस्ती, बेला गांव इस तरह की अनेक बस्तियां थीं। अनेक लोग थे। बहुत सारे अलग–अलग काम करने वाले लोग थे। मैं अगर कहूं तो डेढ़ लाख की आबादी थी। इस पुश्ते में 40 हजार के करीब घर थे और उन घरों को पूरे तौर पर इसमें चित्रित करने के लिए बहुत सारे पात्र आप देखेंगे और इस लोकेल का पूरा एक त्रिकोण बनता है। एक तरफ यमुना पुश्ता है जहां पर नेचू है या फरीदा है या आयशा है, ये सारे पात्र हैं। दूसरी तरफ आप देखेंगे कि बिहारी बिल्डिंग है, जिसमें पूनम है, सूरज है, रामवती है और एक तरफ है जो दोनों जगह के बीच में है, जहां पूनम का स्कूल बना हुआ है और दरियागंज का भी इलाका है। ये पात्र वैक्यूम से नहीं परिस्थितियों से पैदा होते हैं और परिस्थिति मैंने आपको पहले बताई थी। यह कहानी बहुत निराशाजनक है। इसमें एक बड़ी त्रासदी आती है कि किस तरह से विस्थापन एक मूल समस्या बनती है। बहुत सारे उपन्यास सिर्फ विस्थापन पर लिखे जा रहे हैं, लेकिन यह उपन्यास सिर्फ विस्थापन की बात नहीं करता। काँधों पर घर विस्थापन दर विस्थापन की बात करता है। मैंने इसीलिए इस उपन्यास की भूमिका में लिखा है कि यह फीनिक्स पक्षी की तरह है, जो बार–बार अपनी राख से अपनी जिजीविषा से उठ खड़े होते है। जब विश्व पुस्तक मेले में काँधों पर घर का विमोचन हुआ राजकमल प्रकाशन से तो वरिष्ठ कथाकार और 'परिकथा' पत्रिका के संपादक आदरणीय शंकर जी ने एक बात बहुत अच्छी कही थी कि 'काँधों पर घर यूं ही नहीं है। यह उन लोगों का भरोसा है कि ये कहीं भी जाएंगे अपनी श्रमशीलता से कहीं भी अपना नया घर बना पाएंगे। मैं यह भी कहूंगी कि जब बहुत अधिक अंधेरा हो तो रचनाकार सिर्फ अंधेरा नहीं दिखाता है। एक रचनाकार ही है जो आशा भी दिखाता है। इस पूरी लड़ाई को लड़ने का एक तरीका है। हम पस्त हिम्मत हो जाएं और हम न लड़ें, हम चूक जाएं, लेकिन ऐसी कहानी पूरे पाठक समाज को क्या दिशा देगी और साहित्य को कहां ले जाएगी? इसके लिए इन पात्रों की परिस्थितियों में भी ऐसी घटनाओं को निर्मित करना कि जहां से इनकी सकारात्मकता सामने आए यही एक रचनाकार का काम है। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने कहा है कि 'मैं आरंभ में अपने पात्रों का हाथ पकड़ कर चलता हूं, लेकिन वे धीरे से मेरा हाथ छोड़कर अपनी दिशा में भाग जाते हैं।' इसी तरह मैंने पात्र गढ़े–रचे लेकिन अपने आप अपना विकास करके वह आगे निकल गए। इसमें आप देखेंगे बहुत सकारात्मक पात्र हैं। एक तरफ पूनम एक ऐसा पात्र है जिसके जीवन में स्वप्न और संघर्ष की इबारतें साथ–साथ चलती हैं। कभी संघर्ष एक बड़ा स्वप्न है और कभी स्वप्न एक संघर्ष बन जाता है। पूनम के जीवन की सबसे पहली ही घटना है, जहां से उपन्यास शुरू हो रहा है कि कैसे वह अपने पति के साथ बदायूं से दिल्ली आ रही है। क्या उसका अपने ही घर में एक विस्थापन हो गया है? घर में संपत्ति का बंटवारा हुआ और उसके पति सूरज के हिस्से में कोई जमीन नहीं है। रोज़ी रोटी के लिए वह दिल्ली आ रहे हैं। यहां से फिर उसके जीवन की शुरुआत होती है और पूनम कई संघर्षों को जीतती है। वह शिक्षा और मानवाधिकारों के लिए लड़ती हुई आगे बढ़ती है।

आम तौर पर आप देखते हैं कि भारत में ही क्या पूरे विश्व की आधी आबादी की अगर हम दास्तां लें तो बहुत सारी स्त्रियों को उनके सहयोगी पुरुष साथी नहीं मिलते। पर, आप इसमें यह पाएंगे क्योंकि मैं अपनी पूरी रचना प्रक्रिया में उस प्रगतिशील मूल्य को मानती हूं जहां पर स्त्री और पुरुष एक साथ चल कर बेहतर दुनिया बनाना चाहते हैं। उस बेहतर दुनिया के लिए मुझे लगता है कि इस तरह की सकारात्मक सोच वाले बहुत सारे पात्र चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है कि इस पूरे उपन्यास में सिर्फ ऐसे ही पात्र हैं। आपको अनीश जैसे पात्र भी मिलेंगे जो उस तरह से सकारात्मक नहीं हैं। आपको और भी कई पात्र मिलेंगे जैसे महावीर एक बहुत शातिर खिलाड़ी, छुटभैया नेता है। ऐसा पात्र जो अपने फायदे के लिए पूनम का लाभ भी उठाता है कि वह यह नहीं चाहता कि वह कभी भी किसी दल की प्रत्याशी बने, सिर्फ उसकी पार्टी को कैसे लाभ पहुंचे। चमकीले पात्र या सकारात्मक पात्र चुनना मेरी मजबूरी नहीं, मेरा निर्णय था कि मैं ऐसे पात्रों को आगे लेकर आऊं ताकि वो जीवन में भरोसा दें और संघर्ष की चेतना को जलाए रखें।

आजकल पत्रकारिता की स्थिति हम सब जानते हैं, जनमंच की कार्यकर्ता सुगंधा का पत्रकार बेटा अनीश कैसे अपनी मां से एकदम अलग है?

सुगंधा एक अलग तरह की मिट्टी में ढली हुई औरत है। उसने प्रेम विवाह किया था, लेकिन बाद में पता लगा कि दोनों जो साथी हैं, उनमें आपसी वैचारिक तालमेल शुन्य है। यदि आप सुगंधा की एक पूरी पारिवारिक पृष्ठभूमि भी देखेंगे तो पता चलेगा कि उसके पिता ऐसे वकील थे जो व्यापक जन समुदाय की मदद करते थे। सुगंधा भी इसी चेतना के साथ पली बढ़ी है। अपने घर में वो अकेली है, कोई भी उसके साथ नहीं है। भाई विदेश में है। पति बाहर कपड़ा व्यवसाय चलाता है और बेटा अनीश बहुत लंबे समय तक अपने पिता के साथ रहा है। इसी से अनीश एक आत्मकेंद्रित, सुविधाजीवी और व्यवसाय बुद्धि का आदमी है, जबकि आप देखते हैं कि जो सुगंधा है, उसकी मां, वह बहुत जमीनी कार्यकर्ता है। वह जमीन से जुड़े लोगों को आगे लाती है। इसी उपन्यास की वह घटना आपको याद होगी जब दवाई लेने के लिए पूनम और सुगंधा मिलती हैं। बातचीत होती है। तब सुगंधा कहती है कि सिर्फ शिक्षा के लिए सोचने से नहीं चलेगा। आप इसको आगे बढ़ाने के लिए भी कुछ करें और फिर वह बाद में उसकी मदद भी करती है। मैं यह कहूंगी कि बहुत सारे परिवार इस तरह के हैं। आप देखिए कि जहां पर जो बच्चे हैं, जरूरी नहीं है कि वो माता पिता के अनुरूप उनका अनुसरण करें। बहुत सारे हमारे कलाकार हैं। बहुत सारे साहित्यकार हैं। उनके घर में उनको कला विरासत में नहीं मिली। उन्होंने अपने आप से अर्जित की है। विरासत में भी मिली है तो जब तक आप लिखेंगे नहीं तो विरासत क्या कर लेगी? जब तक आप आगे काम नहीं करेंगे तो भी विरासत क्या कर लेगी? तो दोनों ही तौर पर आपको अर्जित करना पड़ेगा। अनीश का दिमाग सुगंधा से बिल्कुल ही अलग है।

आप देखते हैं भारत न्यूज़ में जब उसकी एंट्री होती है तो न उसे डेस्क दिया जाता है, न रिपोर्टिंग दी जाती है, उसको फाइलिंग सेक्शन में भेजा जाता है। उसको देख कर वह खुश नहीं होता, क्योंकि अनीश अपने पिता की एप्रोच लगवा कर वहां आया है। संपादक अनीश के पिता को जानते हैं। फाइलिंग सेक्शन में वह बड़ा नाक मुंह सिकोड़ता है कि मैं यहां क्यों काम करूंगा? संपादक से कहता रहता है कि क्या अब मैं रिपोर्टिंग में आऊंगा? आप देखेंगे कि भारत न्यूज में जो मैंने एक पत्रकारिता का संस्थान दिखाया है, उसमें दो तरह की मानसिकता वाले पत्रकार दिखाई देंगे। एक जनपक्षधर पत्रकार हैं और एक मूल्य पक्षधर हैं। मूल्य पक्षधर का मतलब यहां पर अर्थ की दृष्टि से कह रही हूं। दो तरह के चीजें हैं और उसमें अनीश जातिवादी भी है। जब पहली बार वो उमा के साथ रिपोर्टिंग के लिए जाता है। उमा से उसकी बात होती है तो उसके विचार सुनकर अनीश को लगता है कि यह ज़रूर पिछड़ी या दलित जाति की है। वह ऑफिस में पहुंचते ही सबसे पहले उसकी कास्ट की शिनाख्त करवाता है। जब उमा भारद्वाज निकलती तो वह खुश होता है कि चलो चह उमा भारद्वाज है।

आरएलएसी ने लगाई जीत की हैट्रिक

संजीव राज

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के शिक्षकों की क्रिकेट टीम ने अपने तीन अलग–अलग टी–20 मुकाबले में पीजीडीएवी, शिवाजी और आचार्य नरेंद्र देव महाविद्यालय (एएनडीसी) के शिक्षकों की टीम को पराजित करते हुए अपना दबदबा कायम रखा। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राम लाल आनंद महाविद्यालय टीम के कप्तान डॉ. विशाल गोस्वामी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फ़ैसला लिया। टीम ने 20 ओवर में 252 रन बनाए। वहीं लक्ष्य का पीछा करने उतरी आचार्य नरेंद्र देव महाविद्यालय की टीम 113 रनों पर ही सिमट गई।

इस सत्र का पहला मैच 8 अगस्त 2024 को पीजीडीएवी टीम के साथ खेला गया। यह मैच बारिश के कारण 15–15 ओवर का निर्धारित किया गया, जिसमें पीजीडीएवी टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 विकेट पर 156 रन बनाए। इस लक्ष्य का पीछा करते हुए राम लाल आनंद महाविद्यालय की टीम ने 3 विकेट से यह मैच जीत लिया। इस मैच के मैन ऑफ द मैच डॉ. सुरेंद्र कुमार रहे, जिन्होंने 20 गेंदों पर 59 रन की आतिशी बल्लेबाजी से सबका मन मोह लिया।



क्रिकेट में आरएलए के शिक्षक खिलाड़ियों का प्रदर्शन बेहतरीन रहा।

सत्र का दूसरा मैच 11 अगस्त 2024 को शिवाजी कॉलेज के साथ खेला गया, जिसमें राम लाल आनंद महाविद्यालय ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 6 विकेट के नुकसान पर 216 रन का विशाल लक्ष्य दिया। लक्ष्य का पीछा करते हुए शिवाजी कॉलेज की पूरी टीम 92 रन पर ढेर हो गई और यह मैच भी राम लाल आनंद महाविद्यालय ने 119 रन के बड़े फासले से जीत लिया। इस मैच के मैन ऑफ द मैच डॉ. गंधर्व रहे, जिन्होंने 25 गेंदों पर 34 रन बनाए और 10 रन देकर 5 विकेट लिए। साथ ही इस मैच में डॉ. विशाल ने 34 गेंदों पर 48 रन, डॉ. रोशन ने 28 गेंदों पर 53 रन और डॉ. कुलदीप ने 19 गेंदों पर 31 रन बनाते हुए अपनी बल्लेबाजी से सामने वाली टीम के छक्के छुड़ा दिए।

तीसरा टी–20 मैच 15 अगस्त 2024 को राम लाल आनंद महाविद्यालय के मैदान में एएनडीसी कॉलेज के साथ खेला गया। इस मैच में राम लाल आनंद महाविद्यालय ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 विकेट के नुकसान पर 252 रन का पहाड़ जैसा बड़ा लक्ष्य दिया। लक्ष्य का पीछा करते हुए एएनडीसी की टीम 113 रन पर सिमट गई और यह मैच भी राम लाल आनंद महाविद्यालय ने 139 रन के बड़े फासले से जीत लिया। इस मैच के मैन ऑफ़ द मैच डॉ. अंकित रहे, जिन्होंने 44 गेंदों पर 82 रन बनाए और 39 रन देकर 3 विकट लेकर सामने वाली टीम को पस्त कर दिया। साथ ही इस मैच में डॉ. विशाल ने 34 गेंदों पर 85 रन, डॉ. रोशन ने 14 गेंदों पर 25 रन, डॉ. बिजेंद्र ने 9 गेंदों पर 19 रन बनाए। डॉ. अरुण गौतम ने 28 रन देकर 4 महत्वपूर्ण विकेट लिए। इन सभी मुकाबलों में राम लाल आनंद महाविद्यालय के शिक्षक खिलाड़ियों का प्रदर्शन काबिलेतारीफ रहा।

स्किल के आधार पर ही मिल रही हैं नौकरियां

लक्ष्मी

- आरएलए में विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर के बारे में जानकारी दी
- विशेषज्ञ ने कौशल बढ़ाने के लिए प्रेरित किया और उसका महत्व बताया

नई दिल्ली। आज की आधुनिक दुनिया में स्किल को बहुत महत्व दिया जाता है, क्योंकि इस समय नौकरियां इसी के आधार पर दी जा रही हैं। स्किल क्यों जरूरी है और नई कंपनियां क्यों इनको महत्व दे रही हैं। इस पूरे मसले पर 14 अगस्त को राम लाल आनंद महाविद्यालय में एनआईआईटी के सीनियर प्रोडक्ट मैनेजर सायन सेन ने जानकारी दी। प्लेसमेंट सेल की ओर से आयोजित कार्यक्रम का विषय 'ऑपर्च्युनिटीज इन द डिजिटल स्पेस एंड प्रिपेयरिंग फॉर फ्यूचरिस्टिक जॉब्स' रखा गया था।

सायन सेन ने बताया कि किस तरह हमें इस डिजिटल क्षेत्र में रोजगार लेना है और किस तरह अपने आपको इस क्षेत्र के लिए तैयार करना है। इसी के साथ उन्होंने पावर प्वाइंट के माध्यम से विद्यार्थियों को बताया कि डिजिटल क्षेत्र में उभरते अवसरों का पता कैसे लगाएं। उनसे संबंधित अवसरों को कैसे हासिल करें। उनका कहना था कि हर कंपनी चाहती है कि वह अपना समय इनको सिखाने में न लगाएं बल्कि वह पहले सीख कर आएं जिससे उनकी कंपनी को फायदा पहुंचे। जो खुद अपनी कंपनी खोलना चाहते हैं उन्हें पहले अपने को जानना होगा कि वह किस चीज में अच्छे हैं। फिर उन्हें उस राह में काम करना चाहिए। कार्यक्रम में तीनों वर्ष के विद्यार्थी शामिल रहे। अंत में सभी विद्यार्थियों ने सवाल पूछे और सेन ने उनका उत्तर दिया।

कंप्यूटर साइंस को मिला नई लैब का तोहफा

जया सिंह

- आरएलए में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने किया नई लैब का उद्घाटन
- विद्यार्थियों के लिए बनी एयर कंडीशन कक्षाएं, 90 कंप्यूटर से लैस दोनों लैब

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में 12 अगस्त को कंप्यूटर विज्ञान विभाग को नई कक्षाओं और लैब का तोहफा मिला है। इसके लिए इस दिन उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने उद्घाटन समारोह की औपचारिकता पूरी की। इस समय कंप्यूटर विज्ञान विभाग के सभी शिक्षकों के साथ महाविद्यालय के कई वरिष्ठ शिक्षक उपस्थित थे।

महाविद्यालय के इस ब्लाक में दो कंप्यूटर प्रयोगशाला सहित दो कक्षाओं का निर्माण किया गया है। इस प्रयोगशाला मे 90 कंप्यूटर लगाए गए हैं। एक कक्षा में 90 विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था की गई है। शिक्षकों के लिए एक स्टाफ़ रूम का भी निर्माण किया गया है। सभी कक्षाओं मे स्मार्ट बोर्ड और एयर कंडीशन की सुविधा है। बिजली जाने की स्थिति में विद्यार्थियों को किसी तरह की असुविधा न हो, इसलिए यूपीएस के जरिए पर्याप्त बैकअप की व्यवस्था की गई है।

इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों से कहा कि आप लोग पहले वाली लैब में उपकरणों का बेहतर इस्तेमाल करते रहे हैं, मुझे आशा है कि यहां पर भी संसाधनों का बेहतर लाभ उठाएंगे। इस अवसर पर इतिहास विभाग के प्रो. राकेश कुमार, हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, सांखिकी विभाग के प्रो. राजेश सच. देवा, प्रो. वंदना गंडोत्रा सहित विभाग के सभी शिक्षक मौजूद रहे।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर फुटबॉल मैच

खुशी चौहान

नई दिल्ली। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर 29 अगस्त को राम लाल आनंद महाविद्यालय और आर्यभट्ट महाविद्यालय के बीच फुटबॉल मैच का आयोजन हुआ। इस मैच का आयोजन आर्यभट्ट महाविद्यालय ने किया। फुटबॉल मैच का टॉस राम लाल आनंद महाविद्यालय की टीम ने जीता। मैच दो हाफ में विभाजित था। जहां पहला हाफ एक घंटे 35 मिनट खेला गया, इसमें आर्यभट्ट की टीम का स्कोर राम लाल आनंद महाविद्यालय की टीम से 1–0 की बढ़त से आगे था।

दूसरा हाफ पांच मिनट के ब्रेक के बाद 35 मिनट का खेला गया, जहां राम लाल की टीम ने दो गोल के साथ खाता खोला। वहीं आर्यभट्ट की टीम ने भी अपनी एक की बढ़त बनाए रखते हुए दो और गोल किए और मैच को अपने नाम किया। सुबह से ही बारिश के चलते मैच के बीच में भी हल्की बारिश होती रही।



हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों को 'इंडिया अनटच्ड' डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई।

समाज का सच बताती इंडिया अनटच्ड

सोनिका

नई दिल्ली। जातिगत भेदभाव की न कोई सीमा होती है और न ही मजहब। इसी हाशिए के समाज की स्थिति को जानने और समझने के लिए 12 अगस्त को राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में 'इंडिया अनटच्ड : स्टोरी ऑफ़ पीपल अपार्ट' डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग की गई। इसका उद्देश्य भारत में छुआछूत के मसले पर विचार–विमर्श को प्रोत्साहित करना और संवाद शुरू करना रहा।

डॉक्यूमेंट्री दलितों के जीवन का चित्रण प्रस्तुत करती है, जो आधुनिक भारत में उनसे किए जा रहे भेदभाव और बहिष्कार को उजागर करती है। शक्तिशाली दृश्यों और व्यक्तिगत गवाहियों के माध्यम से फिल्म ने सामाजिक पूर्वाग्रहों को चुनौती देने और कार्रवाई को प्रेरित करने का प्रयास किया है। भारत की जड़ों में दबे एक कठोर सत्य को उजागर करने वाली यह डॉक्यूमेंट्री दर्शकों को देश के एक ऐसे हिस्से से रूबरू कराती है, जो अक्सर अनदेखा रह जाता है। स्क्रीनिंग का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को इस कठोर सच्चाई से रूबरू कराना रहा कि सदियों पुराना छुआछूत का दाग आज भी लाखों लोगों के जीवन को जकड़े हुए है। साथ ही उन्हें यह भी बताया गया कि फिल्म में दलितों की पीड़ा को बड़ी ही संवेदनशीलता से उकेरा गया है ताकि किसी भी वर्ग विशेष की भावनाओं को ठेस न पहुंचे। इस मौके पर विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार सहित कई शिक्षक मौजूद थे।

स्वतंत्रता से पहले स्वच्छता की पहल

योगेश

हाथ में तिरंगा लिए देश भक्ति का आह्वान

महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन 14 अगस्त को महाविद्यालय की एनएसएस और एनसीसी इकाइयों ने तिरंगा रैली निकाली। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता की अगुवाई में शिक्षक और विद्यार्थी पहले महाविद्यालय के मुख्य मंच पर एकत्रित हुए। प्राचार्य ने स्वतंत्रता दिवस और तिरंगा के महत्व को रेखांकित किया। लोगों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए हर घर तिरंगा अभियान से जुड़ने की अपील की। इसके बाद प्राचार्य की अगुवाई में सभी लोग परिसर से निकल कर दुर्गाबाई देशमुख मेट्रो स्टेशन की ओर रवाना हुए। आयोजन ने शहरवासियों को हर घर तिरंगा फहराने का आह्वान करते हुए प्रतिभागियों और दर्शकों के बीच देश भक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा की। इस अभियान का उद्देश्य जनता के बीच तिरंगा बांटना, एकता की भावना को बढ़ावा देना और स्वतंत्रता के लिए किए गए बलिदानों की याद करना था।

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री के स्वच्छता और हर घर तिरंगा अभियान को आगे बढ़ाने और लोगों को इसके प्रति जागरूक करने के लिए राम लाल आनंद महाविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के पहले दिन स्वच्छता अभियान और दूसरे दिन हर घर तिरंगा अभियान चलाया गया। इसी कड़ी में राम लाल आनंद महाविद्यालय में 13 अगस्त को एनएसएस और एनसीसी के संयुक्त तत्वावधान में स्वच्छता अभियान चलाया गया।

स्वच्छता अभियान के तहत छात्र छात्राओं तथा शिक्षकों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और महाविद्यालय परिसर की साफ सफाई की। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने स्वयं साफ सफाई के प्रति जागरूक रहने के साथ साथ दूसरों को भी इसके प्रति प्रेरित करने का संकल्प लिया। स्वच्छता अभियान का नेतृत्व एनएसएस यूनिट के सचिव गुरुबक्ष सिंह की देखरेख में हुआ।



महाविद्यालय के शिक्षक और एनएसएस के प्रोग्राम अधिकारी डॉ. अनुराग शर्मा ने कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए बताया कि हम सभी को अपने आसपास हमेशा साफ सफाई रखनी चाहिए।

इस दौरान उन्होंने कहा कि स्वच्छता अभियान का मुख्य उद्देश्य कचरा मुक्त भारत का निर्माण करना है। इससे कई लाभ होते हैं। आपके आसपास गंदगी न होने से संक्रामक बीमारियां फैलने का खतरा कम रहता है। लोग स्वस्थ रहते हैं। इसके साथ ही उन्होंने अगले दिन होने वाले हर घर तिरंगा अभियान के बारे में भी जानकारी दी, जिसमें उन्होंने बताया कि आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में "हर–घर तिरंगा अभियान" के अन्तर्गत महाविद्यालय की एनएसएस और एनसीसी यूनिट की ओर से महाविद्यालय के दक्षिणी परिसर तक तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी। यात्रा के दौरान तिंरगा वितरण और लोगों को "हर घर तिरंगा" अभियान का महत्व बताया जाएगा, जिससे लोगों में जागरूकता आएगी।

भारतीय पुस्तकों का वैश्विक स्तर पर प्रभाव कम नहीं है

खुशी, अंशिका वर्मा

- वह लिखिए जो लिखने लायक है, वह पढ़िए जो पढ़ने लायक है : अवधेश
- आज की भाषा के साथ चलना होगा : योगेश

नई दिल्ली। भारतीय पुस्तकों का वैश्विक स्तर पर प्रभाव कम नहीं है, हमें खुद को व्यक्त करने की जरूरत है। बाजार की मांग के साथ आज की भाषा के साथ हमें चलना होगा। पहले हमारी चुनौती 26 अक्षरों से थी, पर अब 50 हजार अरब इमोजीस से है। इसका मतलब है हमारा सामना भावों से है। यह बात अमर उजाला की हिसार यूनिट के संपादकीय प्रमुख योगेश नारायण दीक्षित ने 'भारतीय पुस्तकों का वैश्विक प्रभाव' विषय पर बोलते हुए कही।

गत 10 अगस्त 2024 को दिल्ली पुस्तक मेले में ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया ने पुस्तक विमोचन समारोह का आयोजन किया। समारोह में प्रो. के.पी. सिंह, डॉ. विमलेश कांति वर्मा और गरिमा गौर अतिथि वक्ता के रूप में मौजूद थी। समारोह की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए प्रो. के.पी. सिंह ने कहा कि सबसे पहले खुद पर विश्वास करना सीखना चाहिए। लेखकों को कुछ ऐसा पढ़ना चाहिए जो पढ़ने लायक हो और कुछ ऐसा लिखना चाहिए जो लिखने के लायक हो। गरिमा गौर ने कहा कि भारत के ग्रंथों का विश्व में लगभग हर जगह अनुवाद हुआ है। अवधेश शर्मा ने कहा कि लेखकों के अलावा जो आम व्यक्ति पुस्तक पढ़ते हैं, उन पर भी प्रभाव पड़ता है। अगर कोई काल्पनिक विषयों की किताबें पढ़ता है तो उसका भावुकता पर नियंत्रण होगा और अगर कोई अकाल्पनिक किताबें पढ़ता है तो वह व्यापक रूप से किसी भी विषय पर सोच पाएगा।

डिजिटल मार्केटिंग का ज्ञान नौकरी देने वाला बनाएगा

अरविंद सिंह

नई दिल्ली। आज के इस दौर में विद्यार्थियों को डिजिटल मार्केटिंग एवं डाटा एनालिसिस का ज्ञान होना आवश्यक है। यह सीख आपको रोजगार के नवीन अवसर प्रदान तो करेगी ही, साथ ही आपको नौकरी लेने वाला नहीं बल्कि नौकरी देने वाला बनाएगी। यह बात डाटा एनालिस्ट मयंक द्विवेदी ने 28 अगस्त को राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्लेसमेंट सेल की एकदिवसीय कार्यशाला में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुई कही। आपको बता दें कि मयंक द्विवेदी को इस क्षेत्र में 18 वर्षों का लंबा अनुभव है। साथ ही अमेरिका और कनाडा में परियोजना कार्यों में संलग्न रहे है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को तकनीकी तौर पर समृद्ध होने की आवश्यकता है। तेज़ी से डिजिटलीकृत हो रहे विश्व में हमें ज़रूरत है कि हम डिजिटल मार्केटिंग एवं डाटा एनालिसिस का प्रशिक्षण प्राप्त करें।

साथी स्पीकर शांतनु आनंद (डाटा एनालिस्ट) ने विद्यार्थियों के साथ डाटा एनालिसिस की बारीकियां साझा की। साथ ही इसके बाजार में तेजी से होती वृद्धि के बारे में भी बताया। कार्यशाला में शांतनु आनंद ने ग्राहक व्यवहार को समझने के लिए ऑनलाइन टूल का उपयोग करने की मूल बातें साझा कीं। इस कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों ने सीखा कि अधिक लोगों तक पहुंचने के लिए सोशल मीडिया, ईमेल और सर्च इंजन का उपयोग कैसे करें। कार्यशाला में यह भी दिखाया गया कि बेहतर मार्केटिंग निर्णय लेने के लिए डेटा का विश्लेषण कैसे किया जा सकता है। व्यावहारिक उदाहरणों ने इन विचारों को स्पष्ट रूप से समझाने में मदद की। सत्र का समापन सीखी गई बातों का अभ्यास करने के लिए एक सरल गतिविधि के साथ हुआ। कार्यक्रम में प्लेसमेंट सेल के संयोजक डॉ. पवन कुमार और सह–संयोजक सिद्धार्थ गुप्ता मौजूद रहे।



नेपाल के प्रतिनिधि मंडल ने राम लाल आनंद महाविद्यालय का दौरा कर मीडिया सेंटर और रेडियो तरंग का जायजा लिया।

नेपाली प्रतिनिधिमंडल ने आरएलएसी का दौरा किया

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। पिछली यात्राओं में हम लोग इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन (आईआईएमसी) सहित कई बड़े शैक्षिक संस्थानों का दौरा कर चुके हैं, लेकिन दिल्ली विश्वविद्यालय के इस महाविद्यालय (राम लाल आनंद महाविद्यालय) में जिस तरह की ढांचागत सुविधाओं का इस्तेमाल करते हुए विद्यार्थी अपने को तैयार कर रहे हैं वह अलग तरह का अनुभव है। बातचीत का यह सार है सार्क जर्नलिस्ट फोरम नेपाल के पत्रकारों के उस प्रतिनिधि मंडल का, जिसने महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम स्टूडियो, टीवी स्टूडियो, प्रिन्ट मीडिया लैब और उसमें हो रहे प्रोडक्शन को देखकर प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता से बातचीत करते हुए जाहिर किया।

सार्क जर्नलिस्ट फोरम इंडिया चैप्टर के प्रयास से नेपाल का यह प्रतिनिधि मंडल उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले की सीमा वाले सड़क मार्ग से भारत की यात्रा पर आया था। इसमें नेपाल चैप्टर के अध्यक्ष राजू लामा, मो. आरिफ अंसारी, रमेश चंद्र भंडारी, अमजद अली और रुद्र प्रसाद सुबेदी शामिल थे। इन लोगों का सामुदायिक रेडियो से लेकर टीवी, वेबसाइट और प्रिन्ट पत्रकारिता से लंबा जुड़ाव रहा है। इंडिया चैप्टर के अध्यक्ष सुधांशु अनिरुद्ध की अगुवाई में प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता विभाग का दौरा किया।

नेपाल के मीडिया पर राजू लामा और मो. आरिफ अंसारी ने रेडियो तरंग की टीम से अपने अनुभव साझा किए। तत्पश्चात टीवी स्टूडियो और प्रिंट की लैब देखी। वहीं पर विभाग के प्रकाशन 'सम्भव' पत्रिका, 'आरएलए समाचार' और 'कैम्पस कनेक्ट' को निहारा। साथ ही कहा कि यहां तो मीडिया के क्षेत्र को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को मुकम्मल तरह से तैयार किया जा रहा है। पत्रकारिता विभाग का कामकाज देखने के बाद वह प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता से मिले। सभी संस्थानों में मिल रही सुविधाओं के साथ महाविद्यालय की सुविधाओं पर बातचीत की। प्राचार्य के साथ मासिक ई–न्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' के अगस्त अंक का विमोचन किया। विभाग के काम की तारीफ करने के साथ उन्होंने भविष्य में महाविद्यालय के साथ मिलकर मीडिया पर कान्फ्रेंस करने का सुझाव रखा।

शैक्षिक आदान–प्रदान के तहत शिक्षकों और विद्यार्थियों की यात्राओं की बात की। इस पर प्राचार्य ने उन्हें इन चीजों को दिखाया। साथ ही बताया कि हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार के साथ मिलकर विभाग के शिक्षक साथी यह काम कर रहे हैं।

भारत का विभाजन बना संस्कृतियों का विभाजन

स्मृति

नई दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 14 अगस्त को नई दिल्ली के भारत मंडपम में भारत विभाजन विभीषिका कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में राम लाल आनंद महाविद्यालय के एनएसएस के वॉलन्टियर्स भी शामिल हुए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. प्रकाश चंदानी और मनोज तिवारी रहे।

अतिथि डॉ. सचिदानंद जोशी ने सभी का स्वागत करते हुए लोगों को विभाजन के समय घटित हुई दुःखद घटनाओं का स्मरण कराया। उन्होंने स्वतंत्रता दिवस की महत्ता को बताते हुए आगे कहा कि वह राजनीति का ही नहीं बल्कि संस्कृति का भी अवैज्ञानिक विभाजन था। कार्यक्रम के दौरान इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर ऑफ़ आर्ट्स की ओर से निर्मित एक डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई, जिसमें शरणार्थियों की दयनीय स्थितियों को दिखाया गया। कार्यक्रम का समापन करते हुए विभाजन के दौरान हताहत हुए शरणार्थियों को याद किया गया। उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए दो मिनट का मौन रखा गया।

अमर उजाला का कैंपस प्लेसमेंट

शिवांश सक्सेना

नई दिल्ली। देश की राजधानी सहित कई राज्यों से प्रकाशित प्रमुख दैनिक समाचार पत्र 'अमर उजाला' ने कैंपस प्लेसमेंट के तहत राम लाल आनंद महाविद्यालय में एक आयोजन किया। महाविद्यालय की प्लेसमेंट सेल की ओर से प्लेसमेंट ड्राइव के दौरान यह आयोजन हुआ। आयोजन की इस पूरी प्रक्रिया का प्रारंभिक चरण 16 अगस्त को महाविद्यालय के एम्फी थिएटर में हुआ। 'अमर उजाला' के दिल्ली ब्यूरो प्रमुख संतोष कुमार शुक्ला की देखरेख में पहले चरण में लगभग 20 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें महाविद्यालय से हाल ही में स्नातक की पढ़ाई कर चुके विद्यार्थी भी शामिल थे। प्रतिभागी केवल पत्रकारिता में विशेषज्ञता रखने वाले ही नहीं बल्कि अन्य विषयों के विद्यार्थी भी इस प्रक्रिया में शामिल हुए।

प्रारंभिक चरण के दौरान भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को एक योग्यता परीक्षा देनी थी, जो वर्तमान घटनाओं और समाचार विषयों पर केंद्रित थी। इस प्रक्रिया के बाद के चरणों में एक समूह चर्चा और व्यक्तिगत साक्षात्कारों की श्रृंखला आयोजित की जाएगी। तीन चरणों में सफलता हासिल करने वाले प्रतिभागी प्रशिक्षु पत्रकार के रूप में 'अमर उजाला' में प्लेसमेंट प्राप्त करेंगे। शुरुआती प्रक्रिया पूरी कराने में 'अमर उजाला' की पत्रकार रश्मि शर्मा और महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के एलुमनाइ और अब 'अमर उजाला' के पत्रकार आशीष की प्रमुख भूमिका रही। प्लेसमेंट सेल के संयोजक डॉ. पवन शर्मा व सेल से जुड़े विद्यार्थियों ने भी प्रक्रिया सम्पन्न कराने में अपना बेहतरीन योगदान दिया। परीक्षा शुरू होने से पहले संयोजक डॉ. पवन शर्मा ने प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं तो 'अमर उजाला' के दिल्ली ब्यूरो प्रमुख संतोष कुमार शुक्ला ने उसके नियम–कायदे बताए। इसमें सफल होने वाले प्रतिभागी ही आगे के चरण से गुजरेंगे। इस अवसर पर हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के शिक्षक डॉ. अटल तिवारी और डॉ. प्रदीप कुमार भी मौजूद रहे।



अमर उजाला कैंपस प्लेसमेंट का पहला चरण महाविद्यालय में हुआ।

- राम लाल आनंद महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए सुनहरा अवसर
- तीन चरणों में पूरी होगी प्रक्रिया, पहला चरण महाविद्यालय में किया गया

आज युवा को खबर नहीं कारण और निवारण चाहिए

आस्था त्रिपाठी

नई दिल्ली। 'अगर हम चाहते हैं कि देश का युवा अखबार से जुड़े तो हमें उन्हें खबर नहीं देनी है। हमें उन्हें घटना का इतिहास, वर्तमान और भविष्य पर उसका असर बताना है। उन्हें उस घटना का विश्लेषण देना है। हमें उन्हें खबर की जिम्मेदारी, जवाबदेही और विश्वसनीयता देनी है। यह बात इंडियन न्यूज पेपर सोसाइटी के अध्यक्ष राकेश शर्मा ने मीडिया संवाद 2024 में पंकज शर्मा के साथ हुई परिचर्चा में कही।

समाचार 4मीडिया ने 12 अगस्त 2024 को मीडिया शिखर सम्मेलन–मीडिया संवाद 2024 का आयोजन किया था। देश के विभिन्न न्यूज हाउस के पदाधिकारी इसमें आमंत्रित थे। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का बढ़ता मायाजाल और मीडिया पर उसके प्रभाव विषय पर चर्चा की गई। इस पर राकेश शर्मा का कहना है कि पारंपरिक मीडिया और सोशल मीडिया दो अलग चीजें हैं। मायाजाल सोशल मीडिया का है, पारंपरिक मीडिया का नहीं। हमारा काम तो सूचना देना है। सही स्थान पर एआई का इस्तेमाल करके हम उसे अपना टूल बना सकते हैं। एआई हमारी मदद कर सकता है, पर हमारा स्थान नहीं ले सकता।

दैनिक जागरण के संपादक विष्णु प्रकाश त्रिपाठी का भी इस विषय पर मिलता जुलता मत है। उनका कहना है कि कृत्रिम बुद्धिमता एक तंत्र है और हिन्दी पत्रकारिता मंत्र से चलती है तंत्र से नहीं। पत्रकारिता एक मौलिक विषय है और एआई में मौलिकता नहीं होती। यह चिंता का नही चिंतन का विषय है। यह हमारे लिए सीखने के नए अवसर की तरह है। इंडिया डेली लाइव और इंडिया न्यूज के एडिटर इन चीफ राहुल महाजन और राणा यशवंत का कहना है कि एआई के खतरों के सामने फायदे बौने दिखाई देते हैं। समाचार 4मीडिया ने 40 अंडर 40 के 3तक एडीशन में 94 पत्रकारों का चयन किया। इन चयनित पत्रकारों को उत्तर प्रदेश उपमुख्यमंत्री और मुख्य अतिथि ब्रजेश पाठक ने पुरस्कृत किया। इस मौके पर बड़ी संख्या में पत्रकार मौजूद रहे।

राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार में शामिल हुआ आरएलए

अंजली

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के भूविज्ञान विभाग को राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार 2023 में सम्मिलित होने का अवसर मिला। पुरस्कार समारोह राष्ट्रपति भवन के कल्चरल सेंटर ऑडिटोरियम में 20 अगस्त 2024 को आयोजित किया गया। समारोह में विभाग के शिक्षक डॉ. सरबरी नाग और अरुण कुमार सहित द्वितीय और तृतीय वर्ष के 18 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। सभी लोग सुबह नौ बजे कल्चरल सेंटर पहुंचे।



राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार समारोह 2023 में शिक्षकों और विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

समारोह में देश के विभिन्न क्षेत्रों से शोधकर्ताओं को पुरस्कृत करने हेतु आमंत्रित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू शामिल हुईं। खान मंत्रालय के सचिव वी.एल. कांता राव ने कार्यक्रम शुरू करते हुए इस पुरस्कार के बारे में जानकारी देते हुए इसकी महत्ता बताई। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, जी. किशन रेड्डी कोयला एवं खान मंत्री, सतीश चंद्र दुबे राज्य मंत्री कोयला एवं खान की उपस्थिति में 21 शोधकर्ताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके बाद सतीश चंद्र दुबे और जी.किशन रेड्डी ने अपने भाव प्रकट करते हुए प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए नारे 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान' पर प्रकाश डाला। द्रौपदी मुर्मू ने विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की महत्ता पर जोर डाला। कार्यक्रम का संचालन डीडी नेशनल की समाचार उद्घोषक ममता चोपड़ा ने किया। पुरस्कार समारोह का अंत राष्ट्रगान के साथ हुआ।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

खुशी

उप–संपादक

आयुष प्रजापति